अपनी बिजली खुद बनाते लोग

रेणु भट्टाचार्य

स्कॉटलैंड का एक टापू दुनिया का पहला ऐसा द्वीप बन गया है जो विशेष रूप से अक्षय ऊर्जा के साथ अपनी सभी ज़रूरतों को पूरा करता है। लोगों का कहना है कि बदलाव के कारण जीवन बेहतर हुआ है। बिजली के बिल भी कम हुए हैं।

स्कॉटलैंड के उत्तर पश्चिम तट पर बसे द्वीप 'एग' पर सूरज चमक रहा है और सूरज की ये तेज़ किरणें एडी स्कॉट के लिए खुशखबरी लेकर आई हैं। एडी स्कॉट एग द्वीप की अत्याधुनिक अक्षय ऊर्जा योजना के बिजली विशेषज्ञ हैं। स्कॉट बताते हैं कि यह सिस्टम करीब पांच साल से चल रहा है। सिस्टम को चलाने के लिए 85 फीसदी अक्षय ऊर्जा और 15 फीसदी जनरेटर का इस्तेमाल होता है। यहां के लोगों ने इस योजना का नाम 'एगट्रिसिटी' (एग की इलेक्ट्रिसिटी) रखा है। द्वीप में रहने वाले सैकड़ों लोगों को पहले डीज़ल जनरेटर से बिजली मिलती थी। जनरेटर से शोर, प्रदूषण के अलावा उसे चलाना भी महंगा साबित होता था। बातचीत में स्कॉट ने बताया कि एक दिन में पांच घंटे बिजली के लिए एक बैरल डीज़ल खरीदना पड़ता था। अब मुझे चौबीस घंटे बिजली मिलती है और खर्च महीने में सिर्फ तीस पाउंड ही होता है।

अटलांटिक महासागर के किनारे स्थित इस द्वीप के लिए स्थिति बेहद अच्छी है। द्वीप पर पवन की कोई कमी नहीं है। सोलर सेल और पवन चक्की के पास स्थित सबस्टेशन से पूरे द्वीप के घरों तक अंडरग्राउंड तार द्वारा बिजली पहुंचाई जाती है। द्वीपवासियों को पर्याप्त बिजली मिल सके इसके लिए यह सुनिश्चित किया जाता है कि कोई भी पांच किलोवॉट से ज़्यादा बिजली इस्तेमाल न करे। व्यवसायों के लिए दस किलोवॉट की सीमा है।

स्कॉट का कहना है कि कई बार द्वीप में ज़रूरत से ज़्यादा बिजली पैदा हो जाती है। इस द्वीप के लिए विशेष बिजली योजना ही असाधारण नहीं है। 1997 से द्वीप का मालिकाना हक यहां के निवासियों के पास है। इस तरह की स्थिति स्कॉटलैंड के लिए अनोखी है। 1970 में काम करने यहां आई मैगी फिएफे कहती हैं कि द्वीप का मालिक होने से लोग सशक्त हुए हैं। पिछले पंद्रह सालों में एग में काफी सुधार आया है। यहां रोज़गार के साधन पैदा हुए हैं। बहुत से ऐसे नौजवान हैं जो वापस आकर यहां बस गए हैं।

साल में छह महीने से ज़्यादा यहां रहने वाले लोग अपने आप रहवासी समिति के सदस्य बन जाते हैं। हर महीने होने वाली रहवासी समिति की बैठकों में ही पहली बार अक्षय ऊर्जा योजना का विचार सामने आया। फिएफे बताती हैं कि हर बैठक में बिजली का मुद्दा उठता। लोग पवन चक्की लगाने की मांग करते। स्थानीय निवेश की अपील के बाद नई बिजली योजना को हकीकत बनने में समय नहीं लगा।

दूर समंदर की लहरें रेत से टकरा रही हैं। स्थानीय डाकिया जॉन कोरमैक लकड़ी के बने घर के बरामदे पर खड़े होकर सूरज के ढलने का नज़ारा देख रहे हैं। कुछ अर्से पहले उन्हें अगली सुबह तक बिना बिजली के रहना पड़ता था। अब हालात बदल गए हैं। कोरमैक कहते हैं कि मेरे पास पेट्रोल से चलने वाला जनरेटर था, जिसका मैं कभी-कभी इस्तेमाल करता था। लेकिन अक्सर मैं बिना बिजली के ही गुज़ारा कर लेता था। इस योजना से मेरी ज़िन्दगी में क्रांति आ गई। ***(स्रोत फीचर्स)***